रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67 / 2018–20

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –40 ● अंक –13 ● कानपुर 1 से 15 जुलाई 2018 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध करनी होगी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कीर्ति को यदि अक्षुण रखना है तो हमें कार्य को प्रमुखता देनी होगी, इतिहास यह बताता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जन्म बीमारियों के समूल नाश के लिए किया गया था डा0 मैटी ने उस समय देखा कि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां थीं उनसे रोग का समूल नाश नहीं होता था बल्कि लक्षण कुछ समय के लिए दब जाते थे जोकि विपरीत परिस्थितियों के आने पर पुर्नजीवित होकर शरीर को रोगग्रस्त कर देते थे। डा0 मैटी के अनुसार शरीर का रोगग्रस्त होना रस और रक्त के असतुंलन से होता है जब यह दोनों संतुलित अवस्था में होते हैं तो शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है। रोगों का जन्म परिस्थिति जन्य होने के साथ बहुत कुछ मनुष्य के आहार विहार पर निर्भर करता है, जब आहार विहार में खराबी आती है तो ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं जो कि शरीर को रोगग्रस्त कर देते हैं। डा0 मैटी का मानना था कि एक रोग में कई लक्षण एकसाथ प्रकट होते हैं इसलिए हर लक्षण के आधार पर औषधि का चयन कर रुग्ण शरीर का इलाज करना होता है अर्थात संयुक्त लक्षणों वाले रोग के लिए संयुक्त औषधि की आवश्यकता होती है। तत्समय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का जर्मनी और इटली मो बोल–बाला था इसलिए मैटी के इस विचार को वहां के चिकित्सकों ने हास्यस्पद बताया था, यह तो कालान्तर में उनके इस विचार को होम्योपैथी ने ही स्वीकारा, आज की जो होम्योपैथी है उसमें कहीं न कहीं मैटी के विचारों का मिश्रण दिखायी देता है। होम्योपैथी को देश में मान्यता मिल चुकी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता के लिए संघर्षरत है, मान्यता वह विषय है जिसपर सरकार को निर्णय लेना होता है, निर्णय लेने के लिए सरकार के पास बहुत सारे पहलू व मापदण्ड हैं हमें उन मापदण्डों और पहलुओं को पार करना है। तभी जाकर हम सरकार की कसौटी पर खरे उतरेंगे जो मापदण्ड बनायें जाते हैं वह कार्यों के मूल्यांकन और उसकी योग्यता के निर्धारण के लिए होते हैं। जब होम्योपैथी को मान्यता मिली थी उस समय परिस्थितियां दूसरी थीं चिकित्सा शिक्षा का इतना विकास नहीं था, इतना वैज्ञानिक विश्लेषण भी नहीं होता था यदि हम होम्योपैथी की मान्यता पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट नज़र आयेगा कि कार्य के आधार पर ही होम्योपैथी को सरकार द्वारा मान्यता दी गयी थी यदि हम थोड़ा पीछे दृष्टि डालें तो हमें दिखायी पड़ेगा कि उस समय भी होम्योपैथी में बहुत काम हुआ था सर्वाधिक धर्मार्थ व दातव्य चिकित्सालय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के ही दिखायी पड़ते थे। इन्हीं चिकित्सालयों का परिणाम था कि गरीब जन से लेकर मध्यम मध्यवर्गीय तक होम्योपैथी की पहुँच हो गयी पहले लोगों ने कहा कि छोटी मीठी–मीठी गोलियां शरीर पर क्या प्रभाव डालेंगी ? लेकिन जब इनका प्रभाव सकारात्मक दिखा तब समाज में सन्देश गया कि यह चिकित्सा पद्धति लाभकारी है, समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से जुड़ गया इसका परिणाम यह हुआ कि जो अपने आप को सभ्रान्त धनाढ्य व अभिजात्य मानते थे उन्होंने भी होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारा। शनैः शनैः होम्योपैथी जनरूचि में शामिल हो गयी। यही व्यवस्था यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रारम्भ कर दी जाये तो इसमें कोई दो राय नही है कि इस चिकित्सा पद्धति का विकास न हो पाये। जिस विकास की राह में हम सब पंक्तिबद्ध होकर खड़े हैं उन्हें परिणाम मिलने लगेंगे, काम करने के लिए जो वातावरण होना चाहिये वह हमें उपलब्ध है सिर्फ़ हमें अपनी मनोदशा में परिवर्तन लाना है, कार्य के प्रति भाव उत्पन्न करने हैं, परिणामों की चिन्ता किये बगैर हम सबको अपनी पूरी क्षमताओं का प्रयोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य क्षेत्र में लगाना चाहिये, बीमारियां तो बहुत सारी हैं हर एक पर विजय पाना सम्भव नहीं है लेकिन कुछ ऐसी असाध्य बीमारियां जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के लिए भले ही असाध्य हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इन बीमारियों की सफ़ल चिकित्सा उपलब्ध है। एक सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 8 प्रतिशत लोग विभिन्न तरह के कैंसर से पूरी तरह पीड़ित हैं और जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके चिकित्सक इस गम्भीर बीमारी के उपचार के नाम पर आर्थिक शोषण भी करते हैं। सिकायी और कीमोथेरेपी के नाम पर मंहगी–मंहगी दवाईयां रोगियों को लिखी जाती हैं और विवश हो कर रोगी व उनके परिजन कष्ट दूर होने की आशा में सब कुछ सहन करते हैं। कैंसर में रोगी को जिस मंयकर पीड़ा का अनुभव होता है जिसका वर्णन करना आसान नही है मात्र रोगी ही नहीं उसके परिजन भी उसकी इस पीड़ा को सह नहीं पाते हैं परिणामतः जो जहां जानकारी पाता है लाभ के लिए वहां पहुँच जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस गम्भीर और असाध्य बीमारी के लिए औषधियां उपलब्ध हैं बस आवश्यकता है तो सिर्फ़ इनके सही उपयोग की। जैसा कि हम सब लोगों को बताया और पढ़ाया गया है कि **यदि कैंसर अभिशाप है ! तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी वरदान !!**

हमें आज भी याद आता है कि सन् 1990 में दिल्ली के प्रगति मैदान में वर्ल्ड हेल्थ ट्रेड फ़ेयर में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक स्टाल लगा था जहाँ पर अन्य कम्पनियों द्वारा अपने–अपने स्टालों को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए तरह–तरह के उपक्रम किये गये थे, स्टालों को करीने से सजाया गया था स्टाल में सुन्दर और आकषर्ण छरहरी काया वाली बालायें बैठायी गयी थीं जिन्हें देखकर लोग आकर्षित हों और कुछ क्षण उस स्टाल को भी दे दें वहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथीक के स्टाल में सिर्फ़ एक बड़ा सा पोस्टर लगा था जिस पर भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी केन्द्रों को इंगित किया गया था तथा पीछे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था ***Yes We Have Answer To Cancer*** यह शब्द लोगों को इतना प्रभावित कर रहे थे कि पूरे परिसर में लगे हुए सारे स्टालों की तुलना में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस स्टाल में सर्वाधिक भीड़ नज़र आती थी और हर आने वाला यही सवाल करता था कि आप इतने विश्वास के साथ कैंसर के बारे में यह कैसे दावा कर रहे हैं ? सबसे अच्छी बात तो यह थी कि स्टाल को संचालित करने की जिम्मेदारी जिस प्रतिनिधि के पास होती थी वह बड़ी ही सहजता से इसका उत्तर दे देता था चिकित्सा विज्ञान से जुड़े व्यक्ति एक जिज्ञासु की भांति कैंसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विचार जानना चाहता था नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, नई दिल्ली के कुछ छात्र व होम्योपैथी में रिसर्च कर रहे छात्र निरन्तर यह जिज्ञासा व्यक्त करते थे कि क्या इस तरह से भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कैंसर का इलाज किया जा सकता है

एक और लक्ष्य पाने की तैयारी

मनुष्य और जीवन का नियम है कि जब तक उसे लक्ष्य की प्राप्ति नही हो जाती है तब तक वह निरन्तर प्रयास करता रहता है। यह एक अलग बात है कि हर नई तैयारी में कुछ न कुछ नयापन देखने को मिलता है पिछले तीन चार सालो से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी लक्ष्य पाने का प्रयास प्रारम्भ है। यह अलग बात है कि पहले हर व्यक्ति अपने अपने स्तर से प्रयास करता था पर लगातार असफलता ने कुछ सीख दी है यद्यपि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में सरकार को जो प्रपोजल सौपे गये और उसका जो हश्र हुआ वह हम किसी से छिपा नहीं है जहां तक हमें याद आता है कि पिछली बार बंगाल के जिन सज्जन पर पूरा भरोसा करके इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रपत्र तैयार करने को कहा गया था शायद उससे सबक नहीं लिया गया इस बार भी उन्हीं सज्जन का नाम बार बार आगे आ रहा है हमें किसी की योग्यता पर कोई सन्देह नहीं है लेकिन यह भी अच्छी बात नहीं है कि बार बार आउट होने के बाद भी हम शिखर धवन से ही ओपनिंग करायेंगे! यदि उन सज्जन ने किसी अन्य वैज्ञानिक का सहारा लिया है तो बेहतर है। 2 जुलाई को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में यदि उन वैज्ञानिक को सामने किया जाये तो इससे लाभ यह होगा कि परस्पर संवाद बढ़ेगा और किसी के मन में कोई शंका होती तो वह उसी स्थान पर उसका समाधान भी कर लेगा। बार –बार गिरना बार –बार उठना बच्चो का खेल तो हो सकता है लेकिन यह खेल उनको खेलना अच्छा नहीं लगता जो देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों के भविष्य के निर्माण का जिम्मा अपने कंधे पर ले रखें है। लोग पूरे देश से तमाम परेशानियां झेलकर दिल्ली पहुचतें है और इसलिए पहुँचते है कि शायद इस बार कोई ठोस निर्णय हो जाये।

समय के साथ साथ विचारों में परिवर्तन भी लाना होगा काम करने का अधिकार सबको है और कार्य करते हुए ही अपनी योग्यता व गुणवत्ता सिद्ध की जा सकती है। हम पूरी अपेक्षा करते है कि 2 जुलाई को होने वाला सम्मेलन ऐतिहासिक होगा ।

बढ़ रही है अनिश्चितता

जब भी किसी चींज व वस्तु में अनिश्चितता लग जाती है तो तमाम तरह के झंझावत सामने आते है चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी न तो वस्तु है और न ही चींज है यह देश के लाखों लोगो का भविष्य है।

''सामान्यतयः ऐसा देखा जाता है कि हर व्यक्ति में कुछ न कुछ महत्वाकांक्षा होती है यह अलग बात है कि कुछ की महत्वकाक्षायें पूर्ण होती हैं और कुछ जीवन भर अपनी महत्वकाक्षाओं की पूर्ति के लिये प्रयासशील बनें रहते है।''

दुर्भाग्य है कि पिछले लगभग 150 वर्षो से इस चिकित्सा पद्धति के साथ छल किया जा रहा है सबसे से मजेदार बात यह है कि यह छल कोई बाहरी न करके अपने ही कर रहे है। यदि हम पिछले दो तीन वर्षो के कार्यक्रम देंखे तो हम पायेंगे कि जो कुछ भी घटता है उसके आस पास हम ही होते है सुना तो जाता है कि समस्याओं की समाप्ति के लिये प्रयास किये जाते है परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी प्रयास होते है वह एक नई समस्या का जन्म देते है जब प्रयासो की बात आती है तो ऐसा लगता है कि जितने भी लोग लगे है सब के सब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति पूर्ण समर्पित है। परन्तु जैसे ही इनके अन्दर का नेता जागता है सब कुछ तार तार हो जाता है चाहे इन्टर डिपार्टमेन्टल कमेटी की बात हो या सामने चर्चा की।

6 महीने छुट्टी के बाद एक बार फिर लोगो का जोश जागा है फिर से मीटिंगों का दौर शुरू हो गया है सब लोग प्रयास करने में लग गये है लेकिन जो भी कुछ दिख रहा है वह कही से मजबूत नही दिखायी पड़ रहा है, आज आवश्यकता है कि किसी ऐसे मजबूत संगठन को आगे आना चाहियें जो सरकार के पास अपना पक्ष मजबूती से रख सकें।

तमाम बिन्दुओं पर विचार करने के बाद जो दृष्य उभरकर सामने आता है वह यह विचारने पर विवश कर देता है कि इतनी जागरुकता फैलाने के उपरान्त भी चिकित्सक के मन में यह अनिश्चितता जैसा भाव आख़िर क्यों है ! आज की तिथि मे भी उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने के लिये स्वस्थ वातावरण है, स्वस्थ वातावरण के साथ–साथ पूरी अधिकारिता भी है, अधिकारों के रुप में 21 जून, 2011 को भारत सरकार द्वारा जारी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान का आदेश जिसके अनुपालन में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिये 04 जनवरी, 2012 को शासनादेश जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मज़बूती प्रदान करने के साथ–साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने व शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार भी प्रदान किया है।

जब हमारे चिकित्सकों के पास इतने मज़बूत अधिकार हैं तब भी वे विचलित आख़िर क्यों होते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर निश्चित रुप से हमें ख़ोजना होगा अगर इतने अच्छे वातावरण में हमारा चिकित्सक कार्य करने से घबड़ाता है तो कल जब मान्यता मिल जायेगी तब वह अपने आपको किस ढंग से समाज के सामने प्रस्तुत करेगा ! एक प्रश्न बार–बार हमारे मन को परेशान करता है कि क्या हमारा चिकित्सक अपना आत्म–विश्वास खो चुका है ! या प्राप्त अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ है !! गहनता से चिन्तन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलकर आता है कि न तो चिकित्सक अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ है और न ही खोये आत्म–विश्वास वाला वह अति सुरक्षा के चक्कर में अनिश्चित रहता है, हर चिकित्सक को यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि वह चिकित्सा व्यवसाय के क्षेत्र में है तो उसे हर उस नियम का पालन करना होगा जो नियम जनपद में चिकित्सा व्यवसाय करने हेतु सरकार द्वारा बनाये गये हैं और यहां पर नियमो का पालन नहीं करना हमारे चिकित्सकों की सबसे बड़ी कमी है, अभी भी ऐसे चिकित्सकों की बहुतायत है जो बिना पंजीयन के चिकित्सा व्यवसाय में लिप्त हैं, चिकित्सा व्यवसाय के लिये यह आवश्यक है कि चिकित्सक जिस विधा का चिकित्सक है उसे अपना पंजीयन अपने बोर्ड/परिषद में कराना आवश्यक होता है जो लोग ऐसा नही करते हैं वे चिकित्सा व्यवसाय के योग्य नहीं होते हैं, उन्हे चिकित्सा करने का संवैधानिक अधिकार भी नहीं होता है। एक और महत्वपूर्ण पहलू है कि अब पंजीयन लाईफ–टाईम नहीं होता है हर पंजीयन की एक अवधि निर्धारित है निर्धारित अवधि के बाद एक बार कराया गया पंजीयन बैध नहीं रहता है अस्तु हर चिकित्सक को चाहिये कि अपने पंजीयन की वैधता ठीक–ठाक रखे और सबसे बड़ी समस्या एक और है कहने को तो कोई कुछ भी कहे परन्तु यह सत्य है कि हमारे चिकित्सकों में अधिकांश संख्या उनकी है जो अपनी पद्धति पर भरोसा न करते हुये दूसरी अन्य पद्धतियां अपने चिकित्सकीय व्यवहार में लाते हैं, ऐसे चिकित्सक कैसे खुलकर कार्य कर सकेंगे ऐसे लोग ही नयी–नयी अफ़वाहों को जन्म दिया करते हैं और स्वयं में अनिश्चितता पाले रहते है इस अनिश्चितता को दूर करना ही होगा तभी हम प्रगति कर सकते है।

छात्रों जैसा उत्साह हो

किसी भी चीज़ अथवा ज्ञान को पाने के लिए उत्साह का होना बहुत आवश्यक होता है क्योंकि उत्साह जीवन में ऊर्जा का संचार करता है और यही हमारे कार्य में सुग्रहीता को जन्म देता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए भी उत्साह का होना बहुत आवश्यक है बिना उत्साह के कोई भी कार्य प्रगतिपूर्ण नहीं होता है।

आपके पास सबकुछ उपलब्ध हो और उस प्राप्त वस्तु या प्राप्त अधिकार को उपभोग करने के लिए उत्साह न हो तो अच्छी से अच्छी उपलब्धि भी व्यर्थ हो जाती है और जहाँ पर उत्साह होता है वहाँ हर काम भले ही वह कितना कठिन क्यों न हो उत्साह के चलते तत्काल पूरा हो जाता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास कार्य करने के सारे अधिकार हैं और यदि हमारे साथी अधिकारिता पूर्वक इन अधिकारों का प्रयोग करते होते तो शायद स्थिति आज बहुत अच्छी होती ! हम जिन अधिकारों के लिए आज भी स्वयं को पाने के लिए खोज रहे हैं वह अधिकार 4 जनवरी, 2012 को उ0प्र0 चिकित्सा अनुभाग 6 द्वारा ही हमको दिये जा चुके हैं यह आदेश इतना प्रभावी है कि जब तक इस चिकित्सा पद्धति को पूर्ण मान्यता नहीं मिल जाती है तब तक यह शासनादेश ही लाभकारी रहेगा लेकिन इस आदेश के आने के 6 वर्ष पूर्ण हो जाने के उपरान्त भी हम सब वह नहीं पा पाये जो हमारे चिकित्सकों को प्राप्त होना चाहिये था।

यदि हम इस स्थिति पर एक दृष्टि डालते हैं तो यही नज़र आता है कि हमारे चिकित्सक पता नहीं किस हताशा में हैं जो अच्छी से अच्छी उपलब्धि को भी उपभोग में नहीं ला पा रहे हैं इसके पीछे कहीं न कहीं जो कारण छिपा है वह है उत्साह हीनता ! उत्साह का होना इसलिए आवश्यक है क्योंकि अभी रास्ता बहुत लम्बा है और इसी रास्ते पर चलते हुए हमें प्रगति का रास्ता ढूढ़ना है। उत्साह के जो कारक होते हैं उसमें सबसे प्रमुख कारण होता है दृढ़मनः स्थिति, हमें याद आता है कि जब कोई नया छात्र प्रवेश लेता है तो उसके मन में बहुत उत्साह होता है वह अपने भावी भविष्य के लिए हर चीज़ बड़े उत्साह से लेता है विद्यालय भी आता है कक्षायें भी नियमित रूप से अटेंड करता है तथा जो भी कोई आन्दोलन या कार्यक्रम होते हैं उसमें बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेता है और जितने भी अवधि का पाठ्यक्रम होता है उसे सफ़लतापूर्वक पूरा करने का प्रयास करता है।

ठीक इसी तरह से व्यवसाय के लिए सारी औपचारिकतायें पूरी करने के उपरान्त जब वह अपने व्यवसाय में बैठा है तो उसे उत्साह के साथ काम करने में बड़ा आनन्द आता है परिणाम स्वरूप उसे वह सब उपलब्ध होता है जिसकी अपेक्षा वह करता है।

आज इसी तरह के भाव की आवश्यकता हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के अन्दर दिखायी पड़ती है क्योंकि समय के साथ जो कोई नहीं चलता वह बहुत पिछड़ जाता है, पहले हम सारे के सारे लोग इस बात के लिए आन्दोलन करते थे कि किसी भी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई सरकारी आदेश आ जाये, प्रयासों के बाद 4 जनवरी, 2012 का आदेश आया वर्षो की प्रतीक्षा समाप्त हुई और जिस चीज़ के लिए हम लोग वर्षो से संघर्ष रत थे वह प्राप्त हुआ ऐसा नही है कि 4 जनवरी, 2012 का आदेश आसानी से प्राप्त हो गया होगा वर्ष 2003 के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पूरे देश में जो स्थिति हुई वह तो यही बताती थी कि शायद अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का पुर्नजन्म ही मुश्किल से होगा, लेकिन देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों और प्रदेश के चिकित्सकों के मनोभाव का परिणाम था कि सत्य की विजय हुई 25 नवम्बर, 2003 को जिस आदेश के कारण पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी का अवनयन प्रारम्भ हुआ था वही 25 नवम्बर, 2003 का आदेश संजीवनी बनके काम आया 5–5–2010 को भारत सरकार के स्पष्टीकरण के साथ ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के दिन बदलने लगे थे सरकार ने यह स्वीकार कर लिया था कि जिस बन्दी की बात बार–बार की जा रही थी वह बन्दी सरकार द्वारा कभी की ही नहीं गयी थी। लेकिन 5–5–2010 का आदेश मात्र स्पष्टीकरण निकला प्रयोगिक नहीं था तब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने प्रयास किये और वह एतिहासिक आदेश निकाला जो पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। 21 जून, 2011 का यह आदेश जो पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की स्पष्ट अनुमति देता है साथ–साथ इस आदेश के क्रियान्वयन के लिए सभी केन्द्र शासित प्रदेशों सहित सभी राज्य सरकारों को भी निर्देश दिया गया है कि इस आदेश का अनुपालन कर क्रियान्वित करें इसी आदेश का परिणाम है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने 4 जनवरी, 2012 जैसा महत्वपूर्ण आदेश पारित किया और उत्तर प्रदेश राज्य भारत का वह पहला राज्य बना जहाँ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई सकारात्मक शासनादेश जारी हुआ।

आदेश आया सबने खुशियां मनायीं परन्तु लक्ष्य हमारा अभी भी पूरा नहीं हुआ हमारी इच्छा थी कि हमारा हर चिकित्सक अधिकारपूर्वक कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे बढ़ाये और प्रगति की लड़ाई के लिए हमारे सब साथी कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढें लेकिन 6 साल बीत गये 2012 से 2018 हो गया लेकिन स्थिति में बदलाव नहीं आया हमारे चिकित्सकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन तो हुआ लेकिन वह इसे आत्मसात नहीं कर पा रहे हैं यदि उन्होंने पूरे मनोयोग से इस अधिकार को स्वीकारा होता तो शायद इलेक्ट्रो होम्योपैथी यदि शिखर पर नहीं होती तो शिखर के आस पास ज़रूर होती लेकिन निराश होने की कोई बात नहीं है ! समय का चक्र बदलता है मनःस्थित में परिवर्तन आता है और यह परिवर्तन सब कुछ बदलने में सक्षम होता है। हम कर्मयोगी हैं और कर्म पर भरोसा करते हुए भविष्य की नीति निर्धारित करते हैं परिणाम कर्म से ही मिलते है।

यह कटुसत्य है कि विकास ही राह दिखाता है हमारे चिकित्सक भी एक न एक दिन अपने अधिकारों को समझेंगे ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नया आयाम देंगे और यही आयाम हमारे भविष्य का निर्धारण करेंगे अच्छे भविष्य के लिये यह आवश्यक है कि हमारे कार्यो का समुचित मूल्य निकाला जाये तभी जिस अभिष्ठ के लिये हम सब प्रतिबद्ध हैं वह प्रतिबद्धता निभा सकें।

कार्य को दी जायेगी गति—डा0 बाजपेयी

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन आफ इण्डिया द्वारा आयोजित विजय दिवस (21 जून,2018) के अवसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन आफ इण्डिया के राष्ट्रीय महासचिव डा0 पी0 एस0 बाजपेयी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी — इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही बनी रहे इसलिए आवश्यक है कि इस स्थापित चिकित्सा पद्धति का वास्तविक विकास किया जाये और विकास का स्वरूप कुछ इस तरह का हो जिसका लाभ आमजन भी उठा सकें तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकसित किया जा सकता है। वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी चल रहा है वह कुछ सामान्य सा नहीं है विकास के नाम पर बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं बड़े बड़े दावे किये जाते हैं लेकिन जब यर्थाथ के धरातल पर परीक्षण होता है तो जो परिणाम आते हैं वह हमें चकित कर देते हैं केवल उत्तर प्रदेश की बात न करके यदि हम सम्पूर्ण भारत पर एक दृष्टि डालें तो एक बात एकदम स्पष्ट रूप से नजर आती है कि विकास का जो बहाव वास्तविक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है यह हम सब के लिये सोचने का विषय है इन्हीं सब बिन्दुओं पर चिन्तन करने के बाद बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने यह निर्णय लिया कि शीर्घ ही ऐसा कोई नीतिगत निर्णय लिया जाये जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो सके।

यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाज में प्रभावी ढंग से स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि इस चिकित्सा पद्धति का लाभ कुछ व्यक्तियों तक न रहकर सर्वसमाज को मिले कहने को तो कहा जाता है कि जितने भी आसाध्य रोग हैं उनपर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का ज़बरदस्त प्रभाव है जैसा कि पढ़ा और पढ़ाया जाता है उसके अनुसार यह चिकित्सा पद्धति सामान्य से लेकर असाध्य एवं गम्भीर रोगों पर अधिक प्रभावी है लेकिन जिन लोगों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है उनकी संख्या बहुत सीमित है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता है कि उस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाने वाले लोगों की संख्या अधिकाधिक हो, हमें याद करना चाहिये कि आज से 40—45 साल पहले जब होम्योपैथी का इतना प्रसार नहीं हुआ था तब जगह जगह पर इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक रोगियों को स्वतः औषधियों को सेवन करने के लिए प्रेरित करते थे चूंकि मामला शरीर से जुड़ा होता है इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से किसी भी औषधि को स्वीकार नहीं करता है तब उसे यह बताया जाता था कि यह औषधियां यदि लाभ नहीं करेंगी तो हानि भी नहीं करेंगी आज युग बदल चुका है हर क्षेत्र में ज़बरदस्त परिवर्तन हो चुका है। चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े कान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं ऐसे में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समान रूप से स्थापित करना है तो चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत कार्य होना चाहिये हमारे पास जो लाखों की संख्या है उन्हें अपने दायित्वों को पहचानना होगा और दायित्वों का पालन करते हुये एक नई कार्य संस्कृति को जन्म देना होगा, यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की बात करें तो इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं कि चिकित्सा पद्धति का विकास नहीं हुआ है, लेकिन जो संतुलित और समन्वित विकास होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है। यदि हम इसके कारणों पर जायें तो कारण अनेक दृष्टिगोचर होंगे परन्तु यदि हम पूर्ववर्त्ती कारणों को लेकर ही बातें करते रहे तो विकास दूर—दूर तक नहीं हो सकता है।

यह कटु सत्य है कि 2004 से 2012 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये बहुत कठिन रहा है लेकिन जिस सूझ—बूझ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नायकों नें इस चिकित्सा पद्धति को कार्य करने का एक अवसर दिलाया है तो हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम इस प्राप्त अवसर का भरपूर लाभ उठायें जो बीत गया उस पर ही चर्चा करने से अच्छा है कि आगे की सोचें, वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है, प्रतिस्पर्धा में वही टिकता है जिसके पास बौद्धिक सम्पदा का भण्डारण हो, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बौद्धिक सम्पदा की कोई कमी नहीं है परन्तु इस सम्पदा का अभी भी पूर्ण रुप से प्रयोग नहीं हो पा रहा है हमारे चिकित्सकों के मन में पता नहीं कौन सी हीन भावना ने जन्म ले लिया है जिसके कारण वे अपनी पूरी क्षमता के साथ अपना कौशल प्रदर्शित नहीं कर पा रहे हैं, जो चिकित्सक अपने चिकित्सा व्यवसाय में शुद्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति व्यवहार में ला रहे हैं उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हो रही है एवं परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं, इन प्राप्त परिणामों से चिकित्सकों में उत्साह का भाव जागृत हुआ है।

पहले की तुलना में अब औषधियों की कमी नहीं है लगभग हर शहर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां उपलब्ध हैं, हमारे कुछ औषधि निर्माताओं ने लूज़ टैबलेट और स्ट्रिप्स के स्वरुप में अपने उत्पादन प्रस्तुत कर चिकित्सकों को और भी अधिक प्रतिस्पर्धी बना दिया है मूल औषधियों के साथ—साथ इस स्वरुप की औषधियों का प्रयोग चिकित्सक रोगी पर करता है और परिणाम भी अच्छे प्राप्त कर रहा है मगर इस प्रकार के कार्य करने वाले चिकित्सकों की संख्या का प्रतिशत हमें बढ़ाना है जब चिकित्सा पद्धति का प्रभाव सामान्य जन स्वंय अनुभव करेगा तो इस चिकित्सा पद्धति के विकास में ज़्यादा समय नहीं लगेगा। एक क्षेत्र ऐसा है जिसपर कार्य होना है और वह क्षेत्र है हमारी शिक्षण व्यवस्था समय के परिवर्तन को देखते हुये बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने कड़े कदम उठाते हुये अपने हर इन्सटीट्यूटों को निर्देश देने जा रहा है कि अध्यापन पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाये एवं छात्र की उपस्थिति भी अधिकतम हो दूसरे वर्ष से छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान भी उपलब्ध कराया जाये इसी के साथ—साथ बोर्ड ने यह भी योजना बनाई है कि विद्यालयों में जो अध्यापक अध्यापन कर रहे हैं वे नवीन जानकारियों से वे अपडेट रहें ताकि छात्रों को बिलकुल नवीन शोधों एवं जानकारियों से अवगत करा सकें जब—जब मान्यता की बात उठाकर आन्दोलन की बात चिकित्सकों से की जाती है तो हर चिकित्सक को यह समझाया जायेगा कि केन्द्र सरकार मान्यता निश्चित रुप से देगी लेकिन मान्यता के लिये सड़को पर उतरकर आन्दोलन की अपेक्षा अपनी क्लीनिकों में बैठकर कार्य संस्कृति पनपाने का आन्दोलन किया जाये तो विकास की गति ज़्यादा तेज़ी से बढ़ेगी चिकित्सकों के मन में जो निराशा का भाव है वह कार्य से ही दूर होगा ऐसा नहीं है कि कार्य नहीं हो रहा है कार्यसंस्कृति बड़ी तेजी के साथ बदल रही है गुज़रे दो वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने वाले चिकित्सकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है यह किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के शुभ संकेत हैं। जो चिकित्सक अभी भी अन्य विधा प्रयोग में लाते हैं उनके अन्दर भी एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है और यह चिकित्सक भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा करने का मन बना रहे हैं, हम आश्वस्त हैं कि धीरे—धीरे हमारी यह श्रंखला बहुत बड़ी और मज़बूत होगी तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी भी चुनौती को आसानी से स्वीकार कर लेगी। जब—जब नये शोधों की बात होती है तब हम गर्व से कह सकते हैं। हमारे पास किसी भी प्रकार का कोई सरकारी अनुदान नहीं आता है इसके उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ निजी संसाधनों के बल पर शोध कार्य में लगे हुये हैं शोधार्थियों को परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं यदि सरकार का थोड़ा सहयोग और समर्थन मिल जाये तो हमारे शोधार्थी किसी से कम उपयोगी नहीं रहेंगे। सरकार के सहयोग और समर्थन के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया निरन्तर प्रयासशील है, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से इस विषय पर पत्र व्यवहार हो रहा है जहाँ कहीं भी भौतिक सम्पर्क की आवश्यकता होती है वह भी किया जा रहा है, उ0प्र0 में जो क्लीनिकल स्टैब्लिशमेंट रुल लागू होना है हमें उससे भागना नहीं है, इस नियम के अन्तर्गत इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को समाहित करवाना इस समय हमारी प्रमुख प्राथमिकता है क्योंकि यदि प्रदेश में अधिकार पूर्वक कार्य करना है तो राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करना हमारा कर्तव्य है।

हमें अपने कर्तव्य का बोध है लेकिन कभी—कभी कष्ट होता है जब हमारे चिकित्सक अधिकारों के प्रति ज़्यादा जागरुकता दिखाते हैं लेकिन जब इन्हीं प्राप्त अधिकारों को उपभोग करने के लिये जिन कर्तव्यों की आवश्यकता होती है तब वह विमुख हो जाते हैं इस तरह के दोहरे व्यवहार से सफ़लता संदिग्ध रहती है। प्रदेश में बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 और राष्ट्रीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को तीव्रता से विकसित करने के लिये प्रतिबद्ध है।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रशासनिक कार्यालय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुये डा0 एम0एच0 इदरीसी, डा0 वी0 कुमार एवं डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई व मोहिनी बाजपेई

राजनीति से दूर रखें यह मिशन

2 जुलाई को नई दिल्ली में जिस महान उद्देश्य को पाने के लिए सारे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथ एकत्रित हो रहे है उन्हें चाहिये कि वे इस मसले को राजनीतिक चश्मे से न देखे यह एक गम्भीर विषय है देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों के भविष्य का सवाल है लगभग 40 लोगो का नाम लिस्ट में दिखाया जा रहा है उसमें से अधिकांश का जुड़ाव किसी न किसी राजनीतिक मंच से बना हुआ है राजनीति बुरी चीज नहीं है लेकिन जब राजनीति का आवश्यकता हो तभी होनी चाहिये अभी तो हम सभी लोगो को प्रथम दृष्टि से वह प्रपत्र देखना चाहिये जो आने वाले दिनों में इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी को सौंपा जाना है। उसकी गुणवत्ता व योग्यता क्या हो ? जिन लोगो ने प्रपोजल दिये है उन लोगो ने प्रपोजल देने से पहले क्या सोचा था ?

उन्होने जो भी सोचा हो उस आधार पर इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी का सामना करना चाहिये यदि वह सामना नहीं कर सकते है तो उन्हें अपने प्रपोजल को शून्य घोषित कराने की कार्यवाही करनी चाहिये तथा यह भी याचना करनी चाहिये कि उन्हें अब कोई प्रपोजल नहीं देना है।

मान्यता के लिये सोच व नीति बदलनी होगी

किसी भी चिकित्सा पद्धति से जुड़े चिकित्सकों की यह इच्छा होती है कि वह जिस चिकित्सा पद्धति से जुड़ा है उस चिकित्सा पद्धति को पूर्ण वैधानिक दर्जा मिले और मान्यता मिले जिससे कि वह सर उठाकर कह सके कि वह जिस चिकित्सा पद्धति का चिकित्सक है वह अन्य चिकित्सा पद्धतियों से किसी भी तरह कम नहीं है इसे हम विडम्बना ही कहेंगे कि लगभग ढेढ़ सौ वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति पूरे विश्व में प्रचलित है।

इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक लगातार इस चिकित्सा विधा का प्रयोग करते हुए लोगों को स्वास्थ्य लाभ दे रहे हैं लेकिन अभी तक इस पद्धति को मान्यता के दर्शन नहीं हुए। भारत वर्ष में भी यह चिकित्सा पद्धति चरम पर रही है लाखों की संख्या में इस विधा के जानकार अपनी अपनी क्षमता से इस विधा का प्रयोग करते हुए जनस्वास्थ्य में अपनी सहभागिता कर रहे हैं, सामान्य व्याधियों से लेकर गम्भीर बीमारियों को ठीक करने का दावा हमारे चिकित्सकों ने ठोंका और कसौटी पर खरे भी उतरे। कुष्ठ और कैंसर जैसी असाध्य बीमारी पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने जो चमत्कारिक परिणाम दिये वह चौंकाने वाले थे कुछ चिकित्सकों ने एडस पर भी सफ़लता का दावा किया है भले शत प्रतिशत सफ़लता न मिली हो परन्तु कुछ तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने प्रभाव डाला ही होगा। इस तरह से कार्य हो रहा है लेकिन सरकार द्वारा अभी तक किसी भी अधिकरण न गठित होने के कारण हमारे कार्यों का मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है इसी के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य के आधार पर वह स्थान नहीं मिल पा रहा है जो मिलना चाहिये। इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के आन्दोलन की धार लगातार कुंद पड़ती जा रही है ज्यों–ज्यों समय बीतता जा रहा है सरकार मान्यता की तरफ़ ध्यान नहीं दे रही है, मान्यता हमारा अधिकार है, मान्यता हमें मिलनी ही चाहिये लेकिन बदली परिस्थिति में मान्यता कैसी ली जाये ? इस पर हमें नये सिरे से विचार करना होगा मान्यता पर जो परम्परागत ढर्रे हैं, जिनपर हम सब कार्य कर रहे हैं, धीरे–धीरे वह प्रभावहीन होते जा रहे हैं धरना देकर, प्रर्दशन करके, आन्दोलन करके,सरकार को आधे अधूरे प्रपोजल देकर ध्यानाकर्षण तो किया जा सकता है लेकिन किसी परिणाम की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। अभी आप ने पिछले साल देखा कि जब लोग ज्यादा शोर करने लगे तो सरकार ने प्रपोजल मांगा लोगो ने आधे अधूरे प्रपोजल दिये जिसका परिणाम क्या हुआ आप सभी जानते है सरकार तो चाहती ही कि आप उसके पास आधे अधूरे होकर जाये और वह फिर मामले को टाल दें लेकिन मान्यता का प्रकरण जहाँ था वहीं खड़ा है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर हम सबको बैठकर परस्पर विद्वेष मिटाकर गम्भीर चिन्तन करना होगा यदि अभी भी हमने ऐसा नहीं किया तो पीढ़ियां गुज़र जायेंगी और हम मान्यता की आस लगाये ही बैठे रहेंगे। हमें विचार करना चाहिये कि योगा और सोवा रिग्पा जैसी पद्धतियों को मान्यता कैसे मिली ?न कोई शोर, न कोई आन्दोलन, न कोई धूम–धड़ाका, एक प्रस्ताव आया सरकार का समर्थन मिला और मान्यता मिल गयी इसलिए हमें अपनी नीतियों में बदलाव करना होगा पूरानी सोच को बदलना होगा और नये उत्साह के साथ मान्यता की तरफ बढ़ना होगा अब वह निर्णायक समय आ गया है जब सामुहिक स्तर पर ऐसा नीतिगत निर्णय लिया जाये जो सकारात्मक हो और उपयोगी भी हो। अगर सकारात्मक सोच के साथ सभी लोग कार्य करेंगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी लेकिन ऐसा दृश्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी में दिखता कम है लोग अपनी अपनी ढपली और अपना अपना राग शुरू कर देते है और उसी का परिणाम है कि सफलता हमें आज दिनांक तक नहीं मिली । ऐसा नही है कि हमें सफलता मिल नहीं सकती इतिहास गवाह है कि कोई चीज असम्भव नहीं है। हर चीज सम्भव है लेकिन वह तभी सम्भव हो सकती है जब उसमें सोच सही हो। जितने प्रपोजल सरकार के पास गये थे यदि वही लोग एक साथ मिलकर एक प्रपोजल भेजते जैसा कि सरकार चाहती थी परन्तु वह नही हुआ परिणाम आपके सामने है यहाँ सब बड़े होने के लिए संघर्षशील है कोई किसी के पीछे नहीं रहना चाहता है हर व्यक्ति लाइन में सबसे आगे होने का प्रयत्न कर रहा है यह लोग भूल जाते है कि यदि लाइन होगी तो कोई आगे और कोई पीछे तो होगा ही और यदि ऐसा नहीं है तो वह लाइन हो ही नही सकती। अर्थात इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक,संस्था/संगठन प्रमुख,छात्र एवं पैथी से लगाव रखने वाले शुभचिन्तकों को अब मान्यता के लिए नई सोच के साथ और नई नीति के साथ लगना होगा तभी सफलता मिल सकती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेताओं को अब देश में प्रचलित राजनीति से भी कुछ सीख लेनी चाहिये देश में अभी अभी उपचुनाव में जिस तरह से विपक्ष ने सत्तापक्ष को हारने के लिए अपने कट्ठर विरोधी पार्टी दलों से साथ मिलकर स्थापित पक्ष को हराया यानि उन्होने अपनी नीति बदली और सफल भी हुए। कर्नाटक में कांग्रेस और जे.डी.एस ने अलग अलग चुनाव लड़ें लेकिन भाजपा को सत्ता मिलने न पाये इसके लिए उन्होने अपनी नीति बदल दी और दोनो मिलकर कर्नाटक में सरकार बना ली। अर्थात कहने का मतलब यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेताओं को अब अपनी सोच बदलनी होगी ही तभी आप सरकार से कुछ पा सकते है।

मान्यता के लिए नये सिरे से प्रयास करना होगा सभी शीर्ष संस्थाओं को अपना अहं छोड़ना होगा जो जिस स्थिति का है उसपर कायम रहना होगा तभी कुछ हो सकता है। जो जिस स्थिति का अर्थ यह है कि जो साहित्य का उसे साहित्य देखना होगा जो औषधि निर्माता है उसे अपने औषधि का कार्य करना चाहिये जो संस्थायें है उन्हें अपनी संस्थाओं के अनुसार ही कार्य करना होगा । संस्था भी किस स्तर की उसका भी ध्यान देना होगा ऐसा नहीं है कि संस्था क्षेत्र लेविल की हो और व्याख्यान नेशनल लेविल का करे यह भी ठीक नहीं है यह तो वही कवाहत कि बिच्चू झाड़ने का मंत्र न जाने और साँप कि बिल में हाथ डाले। यदि ऐसा होगा तो सफलता कदापि नहीं मिल सकती।

विजय दिवस के अवसर पर माल्यापर्ण करते हुये डा0 डा0 एम0 एच0 इदरीसी– फोटो गज़ट